Dr. Madan Paswan, History.

Class: B.A. Part-I (Hons. P-I + Sub.).

Lecture No. 11.

Date: 10/08/2020

Topic: Unit-IVth (iii) Harshavardhana

from page no. 1-2.

Continue...

हर्ष और नेपाल: हर्षचरित से पता चलता है कि हर्ष के शासन ने हिमाच्छादित पर्वतों के दुर्गम प्रदेश से कर प्राप्त किया था। बुलर आदि कुछ विद्वानों ने इससे यह अर्थ निकाला है कि उसने नेपाल की विजय की थी।

हर्ष और कश्मीर: इतिहासकार राधाकुमुद मुखर्जी ने 'जीवनी' के आधार पर यह बताया है कि कश्मीर पर हर्ष का अधिकार था। जीवनी से पता चलता है कि हर्ष ने यह सुना कि कश्मीर में भगवान बुद्ध का एक दाँत है। वह स्वयं कश्मीर में भगवान बुद्ध के लिए उन्होंने सीमा पर आया और दाँत के दर्शन और पूजा के निमित्त कश्मीर नरेश से आज्ञा माँगी। परन्तु बौद्ध संघ ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस पर कश्मीर नरेश ने स्वयं मध्यस्थता कर के दाँत को हर्ष के सम्मुख कर दिया। उसे देखते ही शिलादित्य (हर्ष) श्रद्धाविह्वल हो उठा तथा बल प्रयोग कर के दाँत को अपने साथ उठा ले गया। परन्तु इस कथन से हर्ष की कश्मीर विजय का निष्कर्ष निकालना असंगत लगता है। कश्मीर का राजा भी बौद्ध था। सम्भव है कि वह हर्ष के प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत रहा हो।

हर्ष और कामरूप: कामरूप का राजा भास्करवर्मा हर्ष का समकालीन था तथा उसने हंसवेग नामक अपने राजदूत के माध्यम से हर्ष के साथ मैत्री संबंध कायम किया था। हर्ष के जीवन काल तक वह उसका मित्र तथा सहायक बना रहा। 'जीवनी' से पता चलता है कि एक बार ह्वेनसांग भास्करवर्मा के दरबार में ठहरा हुआ था और हर्ष ने उसे बुलाने के लिए अपना दूत भेजा। भास्करवर्मा ने कहला भेजा कि वह चीनी यात्री के बदले अपना सिर देना पसन्द करेगा। इस पर हर्ष अत्यन्त क्रोधित हुआ तथा उसने उसका सिर तुरन्त भेजने को कहा। इसे सुनकर भास्करवर्मा अत्यन्त भयभीत हो उठा तथा चीनी यात्री के साथ हर्ष के दरबार में स्वतः उपस्थित हुआ। इससे लगता है कि वह हर्ष की शक्ति से भयभीत था। ह्वेनसांग बताता है कि वह प्रयाग तथा कन्नौज के समारोहों में सम्मिलित हुआ था।

हर्ष और दक्षिण भारत: श्रीकान्त शास्त्री इतिहासकार ने मयूर के एक श्लोक तथा उद्दमने (केरल) से प्राप्त एक लेख के आधार पर यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि हर्ष ने नर्मदा नदी के दक्षिण में सैनिक अभियान किया तथा कुन्तल, चोल और कांची की विजय की। मयूर के श्लोक में हर्ष को कुन्तल प्रदेश, चोल राज्य तथा कांची के पल्लव राज्य की विजय का श्रेय दिया गया है, परन्तु उद्दमने लेख का हर्ष की विजयों से वस्तुतः कोई संबंध नहीं लगता।

साम्राज्य विस्तार: हर्ष के साम्राज्य की सीमाएँ निश्चित करने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि कई विद्वानों ने इसके विषय में अपर्याप्त जानकारी के आधार पर बढ़ा-चढ़ा कर अनुमान लगाये हैं। ह्वेनसांग के अनुसार, हर्ष ने पड़ोसी राज्यों को अधीन कर लिया, प्रभुता न स्वीकार करने वाले राज्यों पर

(Conti...)

आक्रमण किया और अन्त में सौराष्ट्र, कान्यकुब्ज, गौड़, मिथिला और उड़ीसा के पाँच प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। दक्षिण भारतीय अभिलेखों से ज्ञात होता है कि हर्ष सारे उत्तरापथ या उत्तरी भारत का स्वामी (सकलोत्तरपथनाथ) था। डॉ० आर० सी० मजूमदार के अनुसार आरम्भ में हर्ष के राज्य में केवल थानेश्वर और कन्नौज के पुराने राज्य ही सम्मिलित थे। संभव है कि उत्तर और पश्चिम की ओर उसने कुछ वृद्धि की थी। उसमें सम्भवतः पूर्वी पंजाब और उत्तर राजस्थान सम्मिलित माने जा सकते हैं। जिसके आधार पर हर्ष की सीमाओं का आधार जानने को मिलता है। अपने राज्य काल के अन्त में उन्होंने मगध साम्राज्य को भी अपने साम्राज्य में मिला था। उड़ीसा एवं कांगोद तक अपना विजय अभियान ले गया था। लेकिन यह निश्चित नहीं है कि उड़ीसा और कांगोद एवं बीच का प्रदेश भी विजय के रूप में हर्ष के राज्य में मिला लिया गया था अथवा नहीं मिला था।

डॉ० मजूमदार ने डॉ० स्मिथ का यह विचार स्वीकार नहीं किया है कि वल्लभी का राजा हर्ष का सामान्त या करदाता था। उन्होंने स्मिथ का यह विचार भी अस्वीकार किया है कि मालवा, गुजरात, कच्छ और काठियावाड़ प्रायद्वीप भी हर्ष के साम्राज्य में ही थे।

(Continue.....)

Ajanta Officer